राज्य अध्याय 17

1	**प्रार्थना करना**

समूह का अगुवा। परमेश्वर के आत्मा के माध्यम से, उसकी उपस्थिति के बारे में जागरूकता के लिए और उसकी आवाज सुनने के लिए उसके द्वारा मार्गदर्शन हेतु ***प्रार्थना*** करें। अपने समूह और परमेश्वर के राज्य का उपदेश देने के विषय में इस पाठ को प्रभु को प्रतिबद्ध करें।

2	**साझा करना** (20 मिनट) *(शांत समय)* **भजन संहिता 1,2,5 और 8**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें*** *(या* अपने नोट्स से *पढ़ें)* कि अपने दिये गये अनुच्छेद (भजन संहिता 1,2,5 और 22) से शान्त समय में क्या सीखा।
अगर कोई अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3	**स्मरण करना** (5 मिनट) *(मसीही कलीसिया)* **(5) इफिसियों 3:20–21**

दो–दो करके ***पुनरावलोकन*** करें।
(5) कलीसिया में महिमा। इफिसियों 3:20–21। अब जो ऐसा सामर्थी है, कि हमारी बिनती और समझ से कहीं अधिक काम कर सकता है, उस सामर्थ के अनुसार जो हम में कार्य करता है, कलीसिया में, और मसीह यीशु में, उस की महिमा पीढ़ी से पीढ़ी तक युगानुयुग होती रहे। आमीन।

4	**शिक्षा** (85 मिनट) *(यीशु के दृष्टांत)* **खोई हुई भेड़ और उड़ाऊ पुत्र**

लूका 15:1–7 में खोई हुई भेड़ का दृष्टान्त
और लूका 15:11–32 में उड़ाऊ पुत्र का दृष्टान्त
परमेश्वर के राज्य में खोए हुओं के प्रति परमेश्वर के दृष्टिकोण के विषय में है

“एक दृष्टान्त” स्वर्गीय अर्थ के साथ एक सांसारिक कहानी होती है। यह एक सत्य जीवन की कहानी या चित्रण है जो आत्मिक सत्य को सिखाती है। यीशु ने परमेश्वर के राज्य के रहस्यों को उजागर करने और लोगों को उनकी स्थिति की वास्तविकता और उनके नवीनीकरण की आवश्यकता के साथ सामना करने के लिए आम जगह और रोजमर्रा की घटनाओं का उपयोग किया। हम दृष्टान्तों का अध्ययन करने के लिए छह दिशा–निर्देशों का उपयोग करके इस दृष्टान्त का अध्ययन करेंगे (नियमावली 9 में परिशिष्ट 1 देखें)।

क. लूका रचित सुसमाचार में – खोई हुई भेड़ का दृष्टान्त

पढ़ें लूका 15:1–7।

1. दृष्टान्त की वास्तविक कहानी को समझें।

परिचय। दृष्टान्त एक प्रतिकात्मक रूप में बताया जाता है जिसका अपना एक आत्मिक अर्थ होता है। इसलिए हम सबसे पहले उस वचनों को, कहानी की सभ्यता और उसके ऐतिहासिक तथ्यों और कहानी की पृष्ठभूमि को पढ़ेंगें।

चर्चा करें। कहानी में जीवन से जुड़े तथ्य कौन से हैं?

ध्यान दें।

चरवाही करना या चराना। यीशु ने फिलिस्तीन में एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र की यात्रा की और अक्सर उन क्षेत्रों से गुजरे जहाँ चरवाहे अपनी भेड़ों को चराया करते थे। एक चरवाहे के चारों ओर चरने वाली भेड़ों का झुण्ड बहुत ही परिचित दृश्य था। लोग एक चरवाहे की ज़िम्मेदारियों को जानते थे। उनकी ज़िम्मेदारी थी कि भेड़-बकरियों को हरे-भरे चारागाहों और सुखदाई जल के पास ले जाएँ जहाँ वे दिन के समय चर सकें, और उन्हें शेर, भालू, भेड़िये और चोरों से बचाएँ, मेम्नों को सम्भालें, खोई हुई भेड़ों को खोजें और उन्हें झुण्ड में वापस ले आये।

एक भेड़ को लेकर चलना। मध्य पूर्वी चलन के अनुसार एक भेड़ को ले जाने का विशेष तरीका उसे अपने कन्धे पर रखकर, उसकी गर्दन और उसके चारों पैरों सहित उसकी छाती को पीठ के पीछे लगा कर चलना होता था।

---

2. सन्दर्भ की जाँच करें और दृष्टान्त के तत्वों को पहचानें।

परिचय। दृष्टान्त की "कहानी के" संदर्भ में दृष्टान्त की "परिस्थिति" और "व्याख्या या अनुप्रयोग" हो सकते हैं। दृष्टान्त की *परिस्थिति* दृष्टान्त बताये जाने के *माहौल या उपलक्ष्य* के बारे में बता सकती है या यह बता सकती है कि किस *माहौल* में वह दृष्टान्त बताया गया था। कहानी की परिस्थिति प्रायः कहानी के *पहले* पायी जाती है और उसकी व्याख्या या उसका अनुप्रयोग दृष्टान्त की कहानी के *बाद* में पाया जाता है।

खोज व चर्चा करें। दृष्टान्त की परिस्थिति, कहानी और उसकी व्याख्या या अनुप्रयोग क्या है?

ध्यान दें।

(1) इस दृष्टान्त की परिस्थिति लूका अध्याय 15:1–2 में पायी जाती है।

पिछले अवसर में, फरीसियों और उनके शास्त्रियों ने चुंगी लेनेवालों और पापियों के प्रति उसके दोस्ताना व्यवहार के बारे में चेलों से शिकायत की (लूका 5:29–30)। अब उन्होंने ऐसे लोगों के साथ जुड़ने के लिए यीशु की आलोचना की। फरीसियों और शास्त्रियों ने चुंगी लेनेवालों का अपमान किया, क्योंकि वे उन सभी को लालची, जबरन वसूली करने वाले और इस्राएल के गद्दार मानते थे। उन्होंने "पापियों" की ओर भी देखा, जो बुरे लोग थे। वे ऐसे लोग थे जिन्होंने इस्राएल के इन शास्त्रियों द्वारा स्थापित मानकों के अनुसार जीने की कोशिश भी नहीं की। शास्त्रियों ने चुंगी लेनेवालों और पापियों के साथ जुड़ाव को "घृणित" माना। वे उनके साथ भोजन करने पर भी विचार करते थे, विशेष रूप से उनके स्वच्छ भोजन के नियमों के अनुसार, इसे वह अपमानजक समझते थे (लूका 5:30)! लेकिन यीशु इन लोगों के साथ

जुड़े रहे। यहाँ तक कि, उसने मत्ती, चुंगी लेने वाले को अपने चेले के रूप में चुना। इसके विपरित, चुंगी लेनेवाले और अन्य पापी लोग शास्त्रियों के प्रति यीशु के स्वभाव के अन्तर को आसानी से पहिचान गए। इसलिए, वे यीशु को अपना मित्र मानते थे, और वे अक्सर यीशु की शिक्षाओं को सुनने के लिए एकत्रित हुआ करते थे।

(2) दृष्टान्त की कहानी लूका 15:4-6 में लिखी हुई है।

यीशु ने अपनी भेड़ों के साथ एक चरवाहे की परिचित दृष्टि का उपयोग यह सिखाने के लिए किया कि जब व्यक्ति को नाश होने का ख़तरा होता है तो उसे क्या करना चाहिए। सवाल यह है कि क्या एक खोई हुई भेड़ को नज़रअन्दाज़, या भूलना या अपमानित किया जाना चाहिए या उसे ढूँढ़ना चाहिए?

(3) इस दृष्टान्त की व्याख्या और उसका अनुप्रयोग लूका 15:7 में दिया गया है।

---

3. दृष्टान्त के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण को पहिचानें।

परिचय। यीशु ने मन में ऐसा नहीं ठाना था कि उनके द्वारा बताये गये दृष्टान्त की कहानी के हर भाग का कोई न कोई आत्मिक अभिप्राय ज़रूर हो। कहानी के अन्दर पाया जाने वाला प्रासंगिक विवरण वह विवरण है जो दृष्टान्त के केन्द्र बिन्दु या मुख्य विषय या उसकी शिक्षा की ओर संकेत करता है। इसलिए हमें दृष्टान्त की कहानी के हर एक भाग के आत्मिक अभिप्राय की खोज में नहीं लगे रहना चाहिए।

खोजें और चर्चा करें। इस दृष्टान्त की कहानी में कौन सा वर्णन वास्तव में ज़रूरी या प्रासंगिक हैं?

ध्यान दें।

भेड़। पूरी बाइबल में "भेड़" एक व्यक्ति का प्रतिनिधित्व करने वाला प्रतीक है। ऐसा इसलिए है क्योंकि चरवाहे का अपनी भेड़ के साथ और परमेश्वर का अपने लोगों के साथ जो सम्बन्ध है उनमें समानताएँ हैं। भेड़ों में भटकने की प्रवृत्ति होती है (यशायाह 53:6), परन्तु जिनको वे जानती हैं यानी अपने चरवाहे को, उनके पास उसका पालन करने की क्षमता भी होती है (यूहन्ना 10:5)। भेड़ अपने शत्रुओं के विरूद्ध असहाय होती हैं और उन्हें अपने चरवाहे की सहायता की आवश्यकता होती है (यूहन्ना 10:11-13)। "खोई हुई भेड़" निश्चित रूप से एक प्रासंगिक विवरण है और पाप में खोए हुए व्यक्ति हो दर्शाती है।

निन्यानवीं भेड़। यीशु ने इनकी व्याखा एक "धर्मी व्यक्ति" के रूप में की है जिन्हें पश्चाताप की आवश्यकता नहीं है। इसलिए यह एक प्रासंगिक विवरण है। व्याख्या करने वालों ने निन्यानवीं भेड़ की व्याख्या "परमेश्वर की वाचा के वफ़ादार सदस्यों" के रूप में की है, जो आत्मिक रूप से परिपक्व हो चुके हैं जो अब भटक नहीं सकते। उदाहरण के लिए, लोग तीमुथियुस को पसन्द करते हैं। उन्होंने यह धारणा इसलिए बनाई कि परमेश्वर उनसे प्रसन्न होता है, हालाँकि जब कोई पापी मन फिराता है तो वह "ज़्यादा" आनन्दित होता है।

हालाँकि, मूलतः यूनानी शब्दों में केवल "की अपेक्षा" शब्द है और तुलना को "अधिक" या "कि बजाय" के रूप में लेना चाहिए। क्योंकि यीशु निन्यानवे की बजाय उस एक भेड़ के संदर्भ में बताते हैं जो पश्चाताप करती है, पद 7 का अर्थ यह है कि "परमेश्वर एक मन फिराने वाले पापी के विषय में उतना ही आनन्दित होता है, जितना कि निन्यानवे ऐसे धर्मियों के विषय नहीं होता, जिन्हें मन फिराने

की आवश्यकता नहीं।" जैसे लूका 5:31-32 में, यीशु फरीसियों, शास्त्रियों और उनके शिष्यों के बारे में सोच रहे हैं। वे स्वयं को परमेश्वर की दृष्टि में धर्मी मानते थे क्योंकि वे व्यवस्था का पालन करने की कोशिश करते थे और इसलिए उन्हें "डाक्टर" यीशु मसीह की कोई आवश्यकता नहीं थी, जो खोए हुओं को बचाने के लिए आया था। वे अपनी धार्मिकता के विषय में आश्वस्त थे और दूसरों को तुच्छ जानते थे (लूका 18:9)। केवल यह व्याख्या लूका 15:1-2 में इस दृष्टान्त के परिचय को ठीक साबित करती है। निन्यानवे भेड़ें उन लोगों को दर्शाती है जो चुंगी लेनेवाले और पापियों के साथ मेल रखने के लिए यीशु की आलोचना करते है। वे केवल स्वयं की दृष्टि में धर्मी हैं, लेकिन निश्चित रूप से परमेश्वर की दृष्टि में धर्मी नहीं थे। यूहन्ना 9:39 से तुलना करें।

---

4. दृष्टान्त के मुख्य संदेश को पहिचानना।

परिचय। दृष्टान्त का मुख्य संदेश (प्रमुख विषय) या तो कहानी की व्याख्या या उसके अनुप्रयोग में छिपा होता है। जिस तरीके से स्वयं यीशु मसीह ने दृष्टान्त की व्याख्या की या उसका अनुप्रयोग किया, उसी से हमें पता चलता है कि हम उस दृष्टान्त का क्या अर्थ निकाल सकते हैं। दृष्टान्त की सामान्यतः केवल एक शिक्षा होती है, अर्थात् एक केन्द्र बिन्दु होता है। इसलिए, हमें कहानी के हर हिस्से से एक मतलब ढूँढ़ने की कोशिश नहीं करनी चाहिए, वरन् हमेशा उसकी मुख्य शिक्षा पर ध्यान देना चाहिए।

चर्चा करें। इस दृष्टान्त का मुख्य संदेश क्या है?

ध्यान दें।

लूका 15:1-7 में दिए गए खोई हुई भेड़ का दृष्टान्त हमें "परमेश्वर के राज्य में खोए हुओं के प्रति परमेश्वर के दृष्टिकोण" के विषय में बताता है।

इस दृष्टान्त का मुख्य संदेश निम्नलिखित है। "परमेश्वर पिता खोए हुए लोगों के प्रति अपनी करुणा से भरे प्रेम के द्वारा उन लोगों को ढूँढ़ता और पाता है। वह उन लोगों के प्रति आनन्दित होता है जो पश्चाताप करके मन फिराते हैं।"

परमेश्वर खोए हुए लोगों को ढूँढ़ने से मना नहीं करता जिस प्रकार फरीसी और शास्त्री कर रहे थे। वह उन्हें आधे-अधूरे मन से नहीं खोजता, जिस प्रकार उनकी देखभाल करने वाला व्यक्ति करता है। नहीं, वह एक खोए हुए व्यक्ति को लगातार तब तक ढूँढ़ता है जब तक कि वह उसे मिल न जाए।

खोए हुए को ढूँढ़कर बचाना, परमेश्वर के राज्य की मूलभूत विशेषताओं में से एक हैं। परमेश्वर के राज्य में सच्चे लोग यीशु मसीह के द्वारा दिखाए गए कदमों पर चलते हैं और खोए हुए लोगों को ढूँढ़ने और उन्हें बचाने के लिए बाहर जाते हैं।

---

5. दृष्टान्त की तुलना बाइबल में दिये सामान्तर या पूरक गद्यांशों से करें।

परिचय। कुछ दृष्टान्त एक दूसरे के समान अर्थ वाले होते हैं और उनकी आपस में तुलना की जा सकती है। हालाँकि, सारे दृष्टान्तों में दी गयी शिक्षा सामान्तर या पूरक शिक्षा होती है जिसे बाइबल के दूसरे गद्यांशों में सिखाया जाता है। ऐसे पूरक वचन को तलाश करने की कोशिश करें जिससे दृष्टान्त को समझने में आसानी होती हो। हमेशा दृष्टान्त के अर्थ की तुलना बाइबल की स्पष्ट शिक्षा के साथ करें।

पढ़ें भजन 23; यशायाह 40:11; यहेजकेल 34:15-16।

खोजे व चर्चा करें। बाइबल के इन अनुच्छेदों द्वारा जो शिक्षा मिलती है उसकी तुलना इस दृष्टान्त से किस प्रकार की जा सकती है?

ध्यान दें

परमेश्वर एक चरवाहे के समान है। वह अपनी भेड़ को हरी चराइयों और सुखदाई झरने के पास ले चलता है। वह उन्हें ऊँचे-ऊँचे पहाड़ों पर और गहरे नालों पर ले जाकर चराता है। वह मेम्ने को अँकवार में लिए रहेगा और दूध पिलानेवालियों को धीरे-धीरे ले चलेगा। वह स्वयं खोई हुई भेड़ को ढूँढ़ता है और निकाली हुई को लौटा ले आता है। वह घायलों के घाव बाँधता और बीमार को बलवन्त करता है।

ख. उड़ाऊ पुत्र का दृष्टान्त

पढ़ें लूका 15:11-32

1. दृष्टान्त की कहानी को समझें।

परिचय। दृष्टान्त एक प्रतिकात्मक रूप में बताया जाता है जिसका अपना एक आत्मिक अर्थ होता है। इसलिए हम सबसे पहले उन वचनों को, कहानी की सभ्यता और उसके ऐतिहासिक तथ्यों और कहानी की पृष्ठभूमि को पढ़ेंगें।

चर्चा करें। कहानी में जीवन से जुड़े तथ्य कौन से हैं?

ध्यान दें।

उड़ाऊ पुत्र के दृष्टान्त के चार भाग हैं :

(1) उड़ाऊ पुत्र ने अपना घर छोड़ दिया। छोटा भाई घर में रहकर थक गया था। अन्य युवाओं के समान, वह अपने माता-पिता के नियंत्रण से मुक्त होना चाहता था। वह इस बात से आश्वस्थ था कि जब वह अकेला रहेगा, तो अपने माता-पिता की दृष्टि से भी दूर रहेगा, फिर जो कुछ भी चाहे, वह कर सकता है और यही "आज़ादी" उसे "आनन्द" दे सकती थी। अपनी योजना को पूरा करने के लिए उसे पैसों की आवश्यकता थी। वह शायद जानता था कि कानून के अनुसार (व्यवस्थाविवरण 21:17), उसके पिता के मरने के बाद, पिता की एक तिहाई सम्पत्ति उसकी होगी। छोटा पुत्र ऐसा होने तक इंतजार नहीं करना चाहता था, वह अपना हिस्सा अभी चाहता था। इसलिए, शायद, उसके पिता ने सम्पत्ति का कुछ हिस्सा बेचकर नक़दी में परिवर्तित किया होगा। छोटे पुत्र ने शायद इस बात पर विचार नहीं किया कि इससे उसके पिता और परिवार के बाकी लोगों पर क्या असर पड़ेगा। उसके इस बर्ताव ने, कि उसकी यह आज़ादी उसके अपने पिता से लगातार मिल रहे प्रेम और सुझाव से बेहतर है, अपने पिता को बहुत दुःखित किया होगा। सम्पत्ति के बँटवारे के बाद छोटे पुत्र ने अपने पिता के घर को छोड़ दिया और दूसरे देश में जाकर बस गया।

(2) उड़ाऊ पुत्र दूर देश जाकर रहने लगा। उड़ाऊ पुत्र का यह व्यवहार मूर्खता से भरा हुआ था। वह पुत्र सब कुछ, जो उसका था, एकत्रित करके दूर देश को चला गया। यदि उसकी यह योजना सफल नहीं हुई, और उसे घर वापस लौटना पड़े, तो वह पीछे कुछ भी छोड़कर नहीं गया था। इस दूर देश में, उसने अपनी पूरी सम्पत्ति उड़ा दी और उसके पास कुछ भी न बचा। उसकी परिस्थिति को और बुरा बनाने के लिए, वहाँ अकाल पड़ा और अब वह किसी और से मदद की उम्मीद नहीं कर सकता था। अन्त में वह उस देश के निवासियों के यहाँ जा पड़ा और सूअरों को चराने लगा। यहूदी द्वारा

अशुद्ध जानवरों की देखभाल होना बहुत ही अपमानजनक और घृणा की बात थी। शाम को शायद सूअरों को दूसरे लोग खिलाया करते होंगे। उन्हें खाने के लिए फलियाँ दी गईं। हालाँकि, जब वह स्वयं भूखा था, तो किसी ने भी उसे खाने को कुछ नहीं दिया।

आखिरकार, "वह अपने आपने में आया"! इसक मतलब यह है कि घर छोड़ने के बाद उसके साथ जो कुछ भी हुआ, उसके सामने यह सवाल था कि क्या वह स्वयं इन परिस्थितियों के लिए ज़िम्मेदार नहीं था, या इन सब का दोषी कौन है। उसने इस तथ्य के बारे सोचा कि उसके पिता के घर में काम करने वाले मज़दूरों के पास भरपेट भोजन था और वह भूखा है। अपने अपमान, भूख और घर से बाहर रहने के दुःख का एहसास करते हुए वह उस नतीजे पर पहुँचा कि घर को छोड़ देना केवल नासमझ या ग़लती नहीं थी, लेकिन निश्चित रूप से "एक पाप था" (एक ऐसी घटना जिसने परमेश्वर द्वारा निर्धारित उसके जीवन की योजना को धुँधला बना दिया था)! यह न केवल उसके पिता के, बल्कि उससे भी कहीं अधिक "स्वर्ग" (यानी परमेश्वर के विरूद्ध) के विरूद्ध पाप था! पश्चाताप करते हुए, उसने यह महसूस किया कि वह कितना कृतघ्न, स्वार्थी और मूर्ख था!

(3) उड़ाऊ पुत्र का उसके पिता ने बड़े उत्साह से स्वागत किया। कुछ पवित्र संकल्प लेना बहुत ही मुश्किल होता है। लेकिन इस युवक ने वही किया जिसे करने का संकल्प इसने लिया था। वह अपने घर वापस लौट आया। घर तक की दूरी शायद लम्बी थी, वह कमज़ोर था और यात्रा कठिन थी। लेकिन वह दृढ़ रहा! इस बीच, उसका पिता उसे भूला नहीं था और न ही उसे त्यागा था! इसकी बजाए वह अपने पुत्र के घर वापस लौटने की आशा लगाए रहा।

जब उसके पिता ने दूर से ही उसे आते देखा तो वह दया और तरस से भर गया। वह उसे गले लगाने के लिए उसकी ओर दौड़ा और उसे चूमा। पिता ने उसे सहानुभूति दी, अर्थात्, उसने स्पष्ट रूप से देखा कि उसका पुत्र कितना थका हुआ और निराश था और अपने पुत्र की वापसी को उसने अनुकूल रूप में लिया। उसने यह महसूस किया कि उसके पुत्र ने पश्चाताप किया है और जो कुछ भी उसने किया उसके लिए वह बड़ा ही खेदित है। हालाँकि, संसार के उस हिस्से में एक बुजूर्ग व्यक्ति द्वारा दौड़ा जाना गरिमा की बात नहीं मानी जाती थी, लेकिन यह पिता फिर भी दौड़ा! क्योंकि वह अपने खोए हुए पुत्र का स्वागत करने के लिए उत्सुक था! उसने अपने पुत्र के चारों ओर अपनी बाहों को फैलाया, जो यह दर्शाता है कि वह अपने पुत्र को पहले ही माफ़ कर चुका था। उसका चूमा जाना इस बात का प्रतीक है कि वह अपने पुत्र से स्नेह करता है और परिवार में उसे फिर से स्वीकार करता है।

उड़ाऊ पुत्र ने स्वर्ग में परमेश्वर के और अपने पिता के विरूद्ध किए गए अपने पाप का अंगीकार किया। उसने यह स्वीकार किया कि वह अब अपने पिता का पुत्र कहलाने के योग्य नहीं था। उसने अपने पिता से यह कहने का इरादा किया था कि वह उसे अपने एक मज़दूर के समान रख ले (लूका 15:19,21), परन्तु उसके पिता ने उसे ऐसा कहने का अवसर ही नहीं दिया!

पिता का आनन्द और उसकी क्षमा असीम थी कि वह चाहता था कि उसके पुत्र को एक महत्वपूर्ण व्यक्ति के रूप में समझा जाए! "सबसे अच्छे वस्त्र" एक प्रतिष्ठित स्थिति का प्रतीक था, "अंगूठी" अधिकार का प्रतीक थी, और "जूतियाँ" यह दर्शाती थी कि वह एक स्वतंत्र व्यक्ति है न कि दास। "पला हुआ बछड़ा" केवल विशेष अतिथि के आने के अवसर पर मारा जाता था। वहाँ एक समारोह मनाया गया! पद 24 में पिता के शब्दों की व्याख्या आत्मिक अर्थ में की जानी चाहिए (इफिसियों 2:1;

लूका 19:10)। छोटा पुत्र "आत्मिक रूप से मर गया और आत्मिक रूप से जीवित भी हो गया था। वह आत्मिक रूप से खो गया था और आत्मिक रूप से मिल भी गया था!"

(4) उड़ाऊ पुत्र को उसका बड़ा भाई निर्दयी रूप से अस्वीकार कर देता है। कहानी का यह भाग दृष्टान्त के अन्तर्गत आता है। बड़े पुत्र का यह व्यवहार अपने पिता के व्यवहार के विपरित है। यीशु स्पष्ट करना चाहते थे कि जब बड़े भाई ने निर्दयता से अपने छोटे भाई को अस्वीकार कर दिया, तब पिता ने उत्साहपूर्वक अपने पुत्र का स्वागत किया। इसलिए यीशु ने बड़े भाई के व्यवहार की निन्दा की लेकिन पिता के व्यवहार की प्रशंसा की। निम्नलिखित बातों पर ध्यान दें :

- बड़ा पुत्र *नाराज़* हो गया, क्योंकि वह उचित और न्यायपूर्ण (कानून) रूप से सोच रहा था, जबकि पिता पश्चाताप करने वाले एक पापी के मन फिराने से आनन्दित था। पिता बड़ी दया के साथ अपने बड़े पुत्र के पास आकर यह विनती करने लगा कि जो सही है वही किया जाना चाहिए (उत्पत्ति 4:6-7), यानि अपने पश्चाताप करने वाले छोटे भाई का स्वागत करना चाहिए।
- बड़ा पुत्र *मनुष्यों को प्रसन्न करने वाला व्यक्ति था।* उसने अपने पिता के साथ अपने सम्बन्धों की व्याख्या करते हुए यह कहा कि "मैं इतने वर्षों से आपकी सेवा कर रहा हूँ"। बड़ा पुत्र इस बात से असन्तुष्ट था और उसने सारी उम्र गुलामी की भावना से सेवा की थी (गलातियों 1:10 से तुलना करे)।
- बड़ा पुत्र स्वधर्मी था, उसने यह दावा किया कि उसने कभी भी अपने पिता की आज्ञा को नहीं टाला। लेकिन उसे इस बात का एहसास नहीं था कि एक पुत्र से केवल एक बाहरी आज्ञाकारिता की उम्मीद की जाती है।
- बड़ा पुत्र *ईर्ष्यालु* करता था। उसने कहा, " कि आपने मुझे कभी एक बकरी का बच्चा भी न दिया, कि मैं अपने मित्रों के साथ आनन्द करता। परन्तु उसके लिये आपने पला हुआ बछड़ा कटवाया"। वह यह भूल गया कि पिता ने पहले से ही दो-तिहाई सम्पति उसे सौंप दी थी और वह उसे आनन्द से और कुछ भी दे सकता था।
- बड़े पुत्र ने अपने भाई को *अस्वीकार* कर दिया। उसने उसे "अपना भाई" नहीं, बल्कि "आपका यह पुत्र" कहा!
- बड़े पुत्र ने *सच को झूठ में बदल दिया।* उसने अपने भाई पर "पिता की सम्पत्ति" छीनने का आरोप लगाया। लेकिन वह भूल गया कि उसके छोटे भाई ने "अपनी ही सम्पत्ति" ली थी, क्योंकि पिता ने उसके हिस्से की सम्पत्ति को पहले ही उसे दे दिया था।
- बड़ा बेटा *निंदक* था। उसने अपने भाई से बहुत ही बदतमीज़ी से बात की, जैसा कि "वेश्याओं के साथ" समय बिताना।

लेकिन अपने बड़े पुत्र की शिकायतों के बावजूद, पिता ने अपना व्यवहार या निर्णय नहीं बदला! उसने अपने बड़े पुत्र से फिर से वही कहा जो उसने अपने सभी सेवकों से कहा था, " क्योंकि तेरा यह भाई मर गया था, फिर जी गया है : खो गया था, अब मिल गया है।" इसलिए आनन्द मनाना ही सही और उचित कार्य है! उसने कहा, "आनन्द करना और इसमें मगन होना चाहिए!"

---

2. वर्तमान संदर्भ का मूल्यांकन करें और दृष्टान्त के तत्वों को पहिचानें।

परिचय। दृष्टान्त की "कहानी के" संदर्भ में दृष्टान्त की "परिस्थिति" और "व्याख्या या अनुप्रयोग" हो

सकते हैं। दृष्टान्त की परिस्थिति दृष्टान्त बताये जाने के *माहौल* या *उपलक्ष्य* के बारे में बता सकती है या यह बता सकती है कि किस माहौल में वह दृष्टान्त बताया गया था। कहानी की परिस्थिति कहानी प्रायः कहानी के *पहले* पायी जाती है और उसकी व्याख्या या उसका अनुप्रयोग दृष्टान्त की कहानी के *बाद* में पाया जाता है।

खोजें व चर्चा करें। दृष्टान्त की परिस्थिति, कहानी और उसकी व्याख्या या अनुप्रयोग क्या है?

ध्यान दें।

(1) इस दृष्टान्त की परिस्थिति लूका अध्याय 15:1-2 में पायी जाती है।

यह खोई हुई भेड़ों के दृष्टान्त और लूका 15:1-10 में खोए हुए सिक्के के दृष्टान्त के समान है। लूका के सुसमाचार में लिखे हुए खोई हुई भेड़ के दृष्टान्त को देखें।

(2) दृष्टान्त की कहानी लूका अध्याय 15:11-22 में लिखी हुई है।

(3) इस दृष्टान्त की व्याख्या और उसका अनुप्रयोग कहानी में दिया गया है।

इस दृष्टान्त की व्याख्या लूका 15:20-24 और 32 में दी गई है।

---

3. दृष्टान्त के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण को पहिचानें।

परिचय। यीशु ने मन में ऐसा नहीं ठाना था कि उनके द्वारा बताये गये दृष्टान्त की कहानी के हर भाग का कोई न कोई आत्मिक अभिप्राय ज़रूर हो। कहानी के अन्दर पाया जाने वाला प्रासंगिक विवरण वह विवरण है जो दृष्टान्त के केन्द्र बिन्दु या मुख्य विषय या उसकी शिक्षा की ओर संकेत करता है। इसलिए हमें दृष्टान्त की कहानी के हर एक भाग के आत्मिक अभिप्राय की खोज में नहीं लगे रहना चाहिए।

खोजें और चर्चा करें। इस दृष्टान्त की कहानी में कौन-सा वर्णन वास्तव में ज़रूरी या प्रासंगिक हैं?

ध्यान दें

(दृष्टान्त को एक रूपक (उपवाक्य) के रूप में मानना।

कुछ अनुवादकों ने दृष्टान्त को बताने के निम्नलिखित तरीक़े बताए हैं। क्योंकि इनकी व्याख्याएँ संदर्भ के द्वारा नहीं निकाली जा सकती, उन्हें अस्वीकार कर देना चाहिए :

सिंकदरिया के क्लेमेंट (150-216) ने दृष्टान्त की व्याख्या इस प्रकार से की : "अच्छे वस्त्र" अमरता को दर्शाते हैं, "अंगूठी" महिमा को दर्शाती है, "जूतियाँ" सीढ़ी और रथ को दर्शाती हैं जो उसे स्वर्ग की ओर ले जाएँगे, "पला हुआ बछड़ा" मसीह, परमेश्वर का मेम्ना और "पर्व" प्रभु भोज है।

रिचर्ड सी. ट्रेंच (1807-1886) ने दृष्टान्त की व्याख्या इस प्रकार से की : "सबसे अच्छे वस्त्र" मसीह की धार्मिकता या आत्मा की पवित्रता को दर्शाते है और बड़ा भाई प्रेरित युग के यहूदियों को दर्शाता है जो मेल-मिलाप के महान उत्सव में हिस्सा नहीं लेंगे जिसमें परमेश्वर के राज्य में विश्व की अन्यजातियों का स्वागत किया जा रहा था (इफिसियों 2:14-15; 3:2-6 से तुलना करें)।

झूठे शिक्षकों का दावा है कि पापों का प्रायश्चित आवश्यक नहीं है। वे कहते हैं कि यह दृष्टान्त सिखाता है कि परमेश्वर मध्यस्थ यीशु मसीह के प्रायश्चित के बलिदान के बिना किसी भी व्यक्ति को क्षमा कर सकते हैं। वे कहते हैं कि लोगों को केवल परमेश्वर के पास वापस लौटने की आवश्यकता है। हालाँकि, बाइबल स्पष्ट रूप से यह सिखाती है कि : "बिना लहू बहाए क्षमा नहीं होती" (इब्रानियों 9:22; रोमियों 3:21-25अ) (यूहन्ना 6:28-29 से तुलना करें)।

(1) प्रासंगिक विवरण की व्याख्या :

यीशु स्वयं दृष्टान्त के विषय में कहते है कि परमेश्वर पश्चाताप करने वाले पापियों का स्वागत कैसे करते है और दूसरी ओर यहूदियों के धर्म गुरूओं ने कैसे अस्वीकार कर दिया। इसलिए, केवल पिता और दोनों पुत्र विशेष व्यक्तियों को दर्शाते हैं।

पिता। यह त्रिएक प्रेम से भरे स्वर्गीय पिता, जो पापियों को बचाना चाहते हैं, को दर्शाता है। परमेश्वर न केवल पश्चाताप करने वाले पापियों के पापों को क्षमा करते है बल्कि न्याय के दिन उनके पापों को फिर से याद न करने का भी वायदा करते हैं (इब्रानियों 8:12)। और वह उन दानों को भी वापस देते हैं जो उन्होंने पापियों (सभी विश्वासियों की विरासत : अनन्त जीवन, नई सृष्टि, आदि) से छीन लिए थे।

उड़ाऊ पुत्र। यह हर पापी की स्थिति का प्रतीक है जो अपनी पापी स्थिति से घृणा करता है और परमेश्वर की कृपा की ओर लौट आता है। इस संदर्भ में निश्चित रूप से चुँगी लेनेवाले और पापी शामिल थे, जिन्होंने यीशु में एक सच्चा मित्र पाया था और उसकी शिक्षाओं को उत्सुकता से सुन रहे थे।

बड़ा पुत्र। यह स्पष्ट रूप से स्वयं को धर्मी कहने वाले और शास्त्रियों की ओर इशारा करता है, जिन्होंने स्वयं को सही ठहराया, और चुंगी लेनेवालों और पापियों को तिरस्कृत और करूणारहित कर दिया। यह उन लोगों की बुरी भावना और व्यापकता को दर्शाता है जो खोए हुए पापियों के प्रति परमेश्वर की करूणा को नापसन्द करते हैं।

इस दृष्टान्त की कहानी के अन्य सभी विवरणों को कोई विशेष अर्थ नहीं दिया गया है और इनका प्रयोग केवल कहानी को रोचक बनाने के लिए किया जाता है। इसलिए हमें अन्य विवरणों का आकलन नहीं करना चाहिए (उनका विशेष अर्थ नहीं निकालना चाहिए)।

---

4. दृष्टान्त के मुख्य संदेश को पहिचानना।

परिचय। दृष्टान्त का मुख्य संदेश (प्रमुख विषय) या तो कहानी की व्याख्या या उसके अनुप्रयोग में छिपा होता है। जिस तरीके से स्वयं यीशु मसीह ने दृष्टान्त की व्याख्या की या उसका अनुप्रयोग किया, उसी से हमें पता चलता है की हम उस दृष्टान्त का क्या अर्थ निकाल सकते हैं। दृष्टान्त की सामान्यतः केवल एक शिक्षा होती है, अर्थात् एक केन्द्र–बिन्दु होता है। इसलिए, हमें कहानी के हर हिस्से से एक मतलब ढूँढ़ने की कोशिश नहीं करनी चाहिए, वरन् हमेशा उसकी मुख्य शिक्षा पर ध्यान देना चाहिए।.

चर्चा करें। इस दृष्टान्त का मुख्य संदेश क्या है?

ध्यान दें।

लूका 15:11–32 में दिया गया उड़ाऊ पुत्र का दृष्टान्त "परमेश्वर के राज्य में खोए हुओं के प्रति परमेश्वर के दृष्टिकोण" के विषय में बताता है।

इस दृष्टान्त का मुख्य संदेश निम्नलिखित है। "जबकि इस्राएल के धर्मगुरूओं ने अधीरता और कुढ़कुढ़ाहट के साथ पश्चाताप करने वाले पापियों को अस्वीकार कर दिया था, तब बाइबल के परमेश्वर ने अपने राज्य में इन लोगों को स्वागत उत्साहपूर्वक किया। वह अभी भी उनका स्वागत करता है।"

खोए हुए लोगों को बचाना परमेश्वर के राज्य की मूलभुत विशेषताओं में से एक है। परमेश्वर के राज्य के सच्चे लोग यीशु मसीह द्वारा बताए मार्गों पर चलते है और पश्चाताप करने वाले पापियों को अपने हृदय और अपनी कलीसिया में उत्सुकता से स्वागत करते हैं।

---

5. दृष्टान्त की तुलना बाइबल में दिये सामान्तर या पूरक गद्यांशों से करें।

परिचय। कुछ दृष्टान्त एक दूसरे के समान अर्थ वाले होते हैं और उनकी आपस में तुलना की जा सकती है। हालाँकि, सारे दृष्टान्तों में दी गयी शिक्षा सामान्तर या पूरक शिक्षा होती है जिसे बाइबल के दूसरे गद्यांशों में सिखाया जाता है। ऐसे पूरक वचन को तलाश करने की कोशिश करें जिससे दृष्टान्त को समझने में आसानी होती हो। हमेशा दृष्टान्त के अर्थ की तुलना बाइबल की स्पष्ट शिक्षा के साथ करें।

(1) लूका अध्याय 15 में पाये जाने वाले तीन दृष्टान्त।

चर्चा करें। लूका 15 में पाये जाने वाले तीनों दृष्टान्तों की तुलना एक दूसरे से किस प्रकार की जा सकती है?

यह सुझाव दिया गया है कि इन तीनों दृष्टान्तों का क्रम एक अनुपात है : सबसे छोटे से लेकर सबसे बड़े तक : *सौ में से* एक भेड़ खो जाती है; *दस में से* एक सिक्का खो जाता है और *दो में से* एक पुत्र खो जाता है। हमें नहीं मालूम कि इस क्रम का कोई महत्व है या नहीं। फिर भी, उड़ाऊ पुत्र का दृष्टान्त सबसे लम्बा और सबसे ज़्यादा हृदय को छू लेने वाला भी है।

तीनों दृष्टान्तों का मुख्य विषय यह है कि वे खोए हुए लोगों के उद्धार के लिए परमेश्वर के असीम प्रेम को दर्शाते हैं। वे सिखाते हैं कि परमेश्वर तब तक उन्हें ढूँढ़ता रहता है जब तक कि वे उन्हें मिल नहीं जाते, किस प्रकार वह उन्हें वापस लेकर आता है, जब कोई पापी वास्तव में सच्चाई से पश्चाताप करता है तो परमेश्वर किस प्रकार आनन्दित होता है और किस प्रकार उनके जीवन को ज्यों का त्यों कर देता है!

(2) 1 यूहन्ना 2:9–11 ।

चर्चा करें। बाइबल के इस पाठ की तुलना खोई हुई भेड़ के दृष्टान्त से की जा सकती है?

आपके भाई से आपका सम्बन्ध यह दर्शाता है कि वास्तव में आप कौन हैं!

स. परमेश्वर के राज्य में खोए हुए लोगों के प्रति परमेश्वर के दृष्टिकोण के बारे में दृष्टान्तों के मुख्य उपदेशों या शिक्षाओं का सारांश

चर्चा करें। परमेश्वर के राज्य में खोए हुए लोगों के प्रति परमेश्वर के दृष्टिकोण के बारे में दृष्टान्तों के मुख्य उपदेश या शिक्षा क्या हैं? यीशु मसीह ने हमें क्या *जानना* या *मानना* सिखाया और वह हमें *क्या बनना* या *क्या करना* सिखाता है?

ध्यान दें।

(1) सभी लोगों, विशेष रूप से खोए हुए लोगों को, परमेश्वर के पिता रूपी हृदय को जानना चाहिए। इन दृष्टान्तों का मुख्य उद्देश्य है कि यह हमें बताते हैं कि वास्तव में परमेश्वर कौन है और जब कोई पापी पश्चाताप करता है तो वह उनके साथ क्या करता है। खोए हुए के लिए परमेश्वर का असीम प्रेम

उसे ढूँढ़ने और उसे फिर से ज्यों का त्यों बनाने का कारण बनता है। तीनों दृष्टान्त प्रत्येक पापी को अपने हृदय और जीवन को परमेश्वर के सामने समर्पित करने के मार्ग को आसान बनाते हैं।

(2) मसीहियों को खोए हुओं को जीतने की इच्छा विकसित करनी चाहिए।

इन दृष्टान्तों के द्वारा मुख्य शिक्षा यह मिलती है कि वे हमें बताते हैं कि परमेश्वर मसीहियों से क्या करने और बनने की अपेक्षा करता है। मसीहियों को बाहर जाकर खोए हुओं की तलाश करके आनन्द के साथ उन्हें परमेश्वर के पास लाना चाहिए और पश्चाताप करने वाले पापियों का अपने जीवन और कलीसिया में स्वागत करना चाहिए।

लूका 15:1–7 में खोई हुई भेड़ का दृष्टान्त और लूका 15:8–10 में खोए हुए सिक्के का दृष्टान्त "परमेश्वर के राज्य में खोए हुए लोगों के प्रति परमेश्वर के दृष्टिकोण" के बारे में सिखाता है।

इन दृष्टान्तों की मुख्य शिक्षा निम्नलिखित है। "परमेश्वर के पास स्वर्गदूतों की अनगिनत संख्या है और जिनके बीच वह निवास करता है, वह खोए लोगों (पापियों) को ढूँढ़ता है और जब भी कोई पापी पश्चाताप करके परमेश्वर की ओर अपने मन को फिराता है, तो वह बहुत आनन्दित होता है।"

"खोए हुओं को ढूँढ़कर बचाना" परमेश्वर के राज्य की मुख्य विशेषताओं में से एक है। परमेश्वर के राज्य में लोग यीशु द्वारा दिखाए गए मार्गों पर चलते हैं और खोए हुए लोगों को ढूँढ़ते है जिन्हें मसीह बचा सकता है।

(3) विश्वासयोग्य मसीहियों को पापियों के मन फिराने के द्वारा कुढ़कुढ़ाना नहीं चाहिए।

लूका 15:11–32 में उड़ाऊ पुत्र का दृष्टान्त यह भी सिखाता है कि मसीहियों को फरिसियों (जो बड़े पुत्र द्वारा दर्शाया गया) के समान नहीं बनना चाहिए, जिन्होंने परमेश्वर द्वारा खोए हुए लोगों का स्वागत करने का विरोध किया। ऐसे फरीसी आज भी मसीहियों के बीच पाए जाते हैं। वे परमेश्वर द्वारा खोए हुए लोगों का स्वागत करने का विरोध करते हैं क्योंकि उन्हें लगता है कि यह अन्यायपूर्ण है कि जब कोई बुरा व्यक्ति मन फिराता है तो उसके लिए आनन्द मनाया जाए बजाय उसके जो सदैव परमेश्वर की आज्ञाओं को मानने की कोशिश करता रहता है। वे ऐसे लोगों से ईर्ष्या करते हैं, संभवतः क्योंकि वे गुप्त रूप से उड़ाऊ पुत्र के पापपूर्ण जीवन का अनुभव करना चाहते है या क्योंकि वे गुप्तरूप से परमेश्वर के सबसे पसन्दीदा पुत्र होने की इच्छा रखते हैं। आमतौर पर यह देखा गया है कि खोए हुए व्यक्ति की पापपूर्ण जीवनशैली उसके आकर्षण का कारण हो सकती है, लेकिन हमें यह महसूस करना चाहिए कि इससे उस व्यक्ति को उद्धार पाने का कोई आश्वासन नहीं मिलता और उसे परमेश्वर की उपस्थिति के अनुभव, सहयोग और प्रतिदिन मिलने वाले अनुग्रह को त्यागना पड़ा (भजन 73 से तुलना करें)। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि दुष्ट (अधर्मी) कभी भी शान्ति का अनुभव नहीं कर पाएगा (यशायाह 57:20–21), जबकि धर्मी जन लगातार परमेश्वर की भलाई और परिपूर्णता का अनुभव करता रहेगा (भजन 84 से तुलना करें)।

(4) मसीहियों को अन्य मसीहियों की निन्दा या उन्हें अस्वीकार करने से बचना चाहिए।

लूका अध्याय 15:11–32 में लिखा हुआ उड़ाऊ पुत्र का दृष्टान्त यह निम्नलिखित बातें भी सिखाता है। यद्यपि बड़े पुत्र ने निन्दा और अस्वीकृति के कठोर दृष्टिकोण को अपनाया, लेकिन पिता ने छोटे पुत्र को अस्वीकार नहीं किया! यह दृष्टान्त एक ऐसे दर्पण के समान है जिसके द्वारा मसीही जन दूसरे मसीहियों के प्रति अपने दृष्टिकोण को देख सकते हैं। कुछ ऐसी परिस्थितियों में, मसीही जन दूसरों मसीहियों के प्रति निन्दा, अस्वीकृति या आलोचना के कठोर दृष्टिकोण को अपना लेते हैं। कुछ मसीही

जन हैं जो स्वयं को न्यायी या धर्मी समझते हैं और शायद परमेश्वर के सुसमाचार को भूल चुके हैं कि यह संदेश खोए हुए लोगों के प्रति परमेश्वर के प्रेम के विषय में है। अन्य दृष्टिकोण से देखें तो यह मसीही "खो" चुके हैं। उन्होंने पश्चाताप करने वाले पापियों के प्रति परमेश्वर के प्रेम की भावना को खो दिया है। एक मसीही जन को अन्य मसीहियों से प्रेम करना चाहिए और उन्हें परमेश्वर के अनुग्रह का अनुभव कराने और अन्य जातियों और न्यायी और स्वयं को धर्मी मानने वाले मसीहियों से प्रेम करने में सहायता करनी चाहिए। इसके अतिरिक्त, हम मसीहियों को अन्य मसीहियों की निन्दा या अस्वीकृति के दृष्टिकोण से छुटकारा पाने की आवश्यकता है।

जबकि लूका 15:1–7 में लिखा हुआ है कि खोई हुए भेड़ का दृष्टान्त "संसार के सभी खोए हुए गैर–मसीहियों के प्रति परमेश्वर के प्रेम" के विषय में सिखाता है, मत्ती 18:12–14 में खोई भेड़ का दृष्टान्त "संसार के सभी खोए हुए मसीहियों" के विषय में सिखाता है। मत्ती के सुसमाचार में खोई हुई भेड़ के दृष्टांत में दी गयी मुख्य शिक्षा निम्नलिखित है। "परमेश्वर की इच्छा यह है कि उसकी एक भी भेड़ नाश न हो (यूहन्ना 17:12). अंततः नए सिरे से जन्म लेने वाले प्रत्येक मसीही जन पूरी तरह से बचाए जाएंगे। यही कारण है कि परमेश्वर भी ऐसे मसीहियों की तलाश में रहता है जो भटके हुए हैं ताकि वे उन्हें वापस फेर लाये।

"खोई हुई भेड़ को ढूँढ़कर वापस लाना और उसे बचाना", परमेश्वर के राज्य की मूलभूत विशेषताओं में से एक हैं। परमेश्वर के राज्य में सच्चे लोग यीशु मसीह के द्वारा दिखाए गए मार्गों पर चलते हैं और उन लोगों को ढूँढ़ने के लिए बाहर जाते हैं जो मसीही विश्वास और मसीही कलीसिया से भटक गए हैं उन्हें ढूँढ़कर वापस लाते हैं।

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***(प्रतिक्रियाएँ)***
	परमेश्वर के वचन के प्रतिउत्तर में प्रार्थना	

आज आपने जो कुछ सीखा है, उसके प्रतिउत्तर में परमेश्वर से ***छोटी–छोटी प्रार्थना करने के लिए*** समूह में ***बारियाँ लें।***

या समूह को दो या तीन लोगों में विभाजित करें और आज जो आपने सीखा है उसके प्रतिउत्तर में परमेश्वर से प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	***(सौंपा गया कार्य)***
	अगले अगले अध्याय के लिए	

(***समूह अगुवा।*** समूह के सदस्यों को लिखित रूप में घर पर इसकी तैयारी करने को दें या उन्हें इसकी प्रतिलिपि लेने दें)।

1. समर्पण। चेले बनाने, कलीसिया बनाने और राज्य का प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध हों।
2. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर "खोई भेड़ के दृष्टान्त" और "उड़ाऊ पुत्र के दृष्टान्त" का प्रचार करें, पढ़ाएँ या अध्ययन करें।
3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। प्रतिदिन **भजन 10,11,14 और 15** के आधे अध्याय से परमेश्वर के साथ एक शांत समय बिताएँ। पसंदीदा सत्य विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।

4. स्मरण करना। **'ज' श्रृँखला "मसीही कलीसिया" का पुनरावलोकन करें**। (1) कलीसिया का स्वभाव। 1 पतरस 2:5, (2) कलीसिया में होने वाली गतिविधियाँ। प्रेरितों के काम 2:42, (3) कलीसिया की सेवकाइयाँ। इफिसियों 4:12-13, (4) कलीसिया के अगुवों का लक्ष्य। प्रेरितों के काम 20:28, (5) कलीसिया में महिमा। इफिसियों 3:20-21। पिछले 5 स्मरण किए गए बाइबल पदों की दैनिक समीक्षा करें।
5. बाइबल अध्ययन। घर पर अगला बाइबल अध्ययन तैयार करें। **रोमियों 5:1-11।**
   बाइबल अध्ययन के पाँच चरणों की विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
6. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी व्यक्ति या किसी विशेष चीज के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन संहिता 5:3)।
7. प्रचार करने के लिए परमेश्वर का राज्य विषय पर अपनी नोटबुक का अद्यतनीकरण करें। शांत समय के अपने नोट्स, अपने स्मरण किए नोट्स, अपने शिक्षण नोट्स और इस तैयारी को शामिल करें।